# बस्तर क्षेत्र की जनजातीय आनुष्ठानिक व तांत्रिक कलाओं का कलात्मक अध्ययन

चित्रकला विषय में  पी-एच.डी. उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत-शोध प्रबन्ध की प्रस्तावित  रूपरेखा


**शोधार्थी**

हनी कुमारी गौतम

**शोध निर्देशिका**

**डॉ0 मीनाक्षी ठाकुर**

एसोसिएट प्रोफेसर

**ड्रॉइंग एण्ड पेंटिग विभाग, कलासंकाय-**

**दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)**

**दयालबाग आगरा -282005**


**2023**

**शोध-संकल्पना**

जनजातीय कला जनसाधारण की कला है तथा ये कलायें मनुष्य की स्वाभाविक अभिव्यक्ति का सहज रूप होने के कारण आकांक्षा, आशा उत्साह, आनन्द आदि मंगलमय भावनाओं से परिपूर्ण होती है। प्रत्येक देश की विभिन्न प्रकार की जनजातीय कलायें होती हैं तथा इसी प्रकार भारत की अनेक जातियों व जनजातियों में पीढ़ी-दर-पीढ़ी पारंपरिक कलायें अपनी आनुष्ठानिक व तांत्रिक क्रियाओं द्वारा विद्यमान है जैसे-महाराष्ट्र की वर्ली, झारखण्ड की सहरोई, बिहार की जादोपटिया, मध्य-प्रदेश की पिथौरा, उड़ीसा की सोरा, तथा बस्तर क्षेत्र की जनजातीय कलायें आदि।

छत्तीसगढ़ मुख्य रूप से अपनी जनजातीय सभ्यताओं के लिये जाना जाता है, इन जनजातियों ने अपनी समृद्ध आदिवासी संस्कृति के सामाजिक तथा धार्मिक रूप को आनुष्ठानिक व तांत्रिक क्रियाओं द्वारा संरक्षित किया हुआ है। छत्तीसगढ़ के दक्षिण में स्थित बस्तर जिला दन्तेबाड़ा, जगदलपुर तथा कांकेर तीन जिलों में विभाजित कर पुनर्गठित किया गया है। इस क्षेत्र का लगभग 80% भाग आदिवासी जनसंख्या तथा गोंड जनजातियों की उपजातियों में बँटा हुआ है। जिनमें मुरिया, दंडामी माड़िया, हल्बा, गोंड, भतरा, पारथी, परजा, उराव, कमार, भुंजिया आदि प्रमुख है।

बस्तर क्षेत्र में यह जनजातीय-कलायें लाखों वर्षों पूर्व से चली आ रही हैं। बस्तर में आदिवासियों द्वारा निर्मित आनुष्ठानिक व तांत्रिक क्रियाओं से सम्बन्धित सैकड़ों भित्ति-चित्र, स्मृति-स्तम्भ, मूर्तियाँ तथा अन्य कलायें आज भी दिखायी देती है। इन कलाओं में मौलिकता के साथ-साथ आदिवासी संस्कृति की छाप दिखलाई पड़ती है। जो बस्तर क्षेत्र की कलाओं की मुख्य विशेषता है।

बस्तर की कलाओं में आनुष्ठान का बहुत महत्व है। यह आनुष्ठान परम्परायओं तथा धार्मिक मान्यताओं से सम्बद्ध है। जनजातीय लोगों में धार्मिक विश्वास व मान्यताओं का बंधन अत्यधिक कोमल व मजबूत है जिसने इन्हें एकसूत्र करके इस प्रकार बाघा हुआ है कि विभिन्न परिस्थितियों के बावजूद भी ये इस क्षेत्र से बाहर नहीं निकलना चाहते। बस्तर क्षेत्र की आनुष्ठानिक कला का स्वरूप दो प्रकार के चित्रों में दृष्टिगोचर होता है।

1. प्रमुख व्रत तथा त्यौहारों पर चित्र।

2. विभिन्न संस्कारों पर चित्र।

जनजातीय आदिवासियों का मानना होता है कि संसार की रचना जादू से हुई है, तथा आदिवासी समाज में धर्म और जादू का सह-अस्तित्व होता है। दोनों साथ-साथ चलते हैं। दोनों के मध्य सीमा-रेखा निर्धारित नहीं की जा सकती। बस्तर जनजातियों में विभिन्न-विभिन्न प्रकार की आकृतियाँ जैसे-हाथ के ठापे, कलश की आकृति सर्प की आकृति, मानवाकृतियाँ आदि की विभिन्न प्रकार के मंत्र-तंत्र के द्वारा अपने व परिवारजनों के जीवन की मंगलकामना, भूतप्रेत से बचाव तथा व्याधि से सुरक्षा हेतु, बलशाली बनने हेतु आदि क्रियाओं के लिये अपने आस-पास अंकित करते हैं। ये आदिवासी जादू-टोना, मन्त्र-तन्त्र एवं झाड़-फूंक में सिद्धहस्त होते हैं जो इनकी कलाओं के रूप में दृष्टव्य होता है।

वर्तमान समय में शहरी सभ्यता के सम्पर्क तथा शिक्षा के प्रभाव से अब आदिवासी समाज में इन कलाओं के स्वरूप में परिवर्तन देखने को मिलता है। आज ये कलायें सृजनात्मक साधन के रूप आगे बढ़ रही है। भित्ति के चित्रों को साड़ी पर पैटर्न के रूप में तथा मिट्टी के बर्तन मूर्तियाँ, खिलौने, आभूषण इत्यादि स्वरूपों में देखा जा सकता है।

अतः मैं इस शोध के आधार पर **बस्तर क्षेत्र की जनजातीय आनुष्ठानिक व तांत्रिक कलाओं का कलात्मक अध्ययन** द्वारा लोक-जीवन, कलाओं व सांस्कृतिक जीवन को प्रस्तुत करने का प्रयास करूंगी।

**सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन**

एक नियोजित अनुसंधान कार्य का सबसे पहला तथा सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन व अनुसंधान कार्य की सैद्धान्तिक तथा व्यवहारिक पृष्ठभूमि तैयार करना है। मैंने अपने शोध कार्य के विषय के अध्ययन हेतु अनेक पुस्तकों, संदर्भित ग्रन्थों व पत्र-पत्रिकाओं का अध्ययन किया। इन अध्ययन द्वारा समय विशेष के आदिवासियों लोक-कला व जीवन से सम्बन्धित सांस्कृतिक राजनैतिक, आर्थिक भौगोलिक व कलात्मक स्वरूप का ज्ञान प्राप्त होता है।

**भारतीय लोक-कला - छत्तीसगढ़ के सन्दर्भ में डॉ. नीलिमा गुप्ता** द्वारा लिखित पुस्तक है; जिसमें छत्तीसगढ़ की भौगोलिक स्थिति, उसका जनजीवन व कलाओं का वर्णन मिलता है। इसका अध्ययन करके मुझे बस्तर आदिवासियों

की कला से सम्बन्धित ज्ञान प्राप्त हुआ।

**मुरिया और उसका घोटुल - बेरियर एलविन** द्वारा लिखित पुस्तक है; जिसमें बस्तर आदिवासियों के जीवन से सम्बन्धित इतिहास वर्णित है। इसमें इनकी अनेक कलाओं का वर्णन मिलता है।

**बस्तर की आदिवासी एवं लोक हस्तशिल्प परम्परा - हरिहर वैष्णव** द्वारा लिखित है, जिसमें इनकी गृहसज्जा, दैनिक क्रियाओं व अन्य कलाओ व विधाओं का ज्ञान प्राप्त होता है।

**आदिवासी बस्तर का वृहद इतिहास - हीरा लाल शुक्ल** द्वारा लिखित पुस्तक है, जिसमें बस्तर के पारस्परिक स्वरूप का वर्णन मिलता है। इसके अध्ययन से मुझे बस्तर की चित्रकला के कलात्मक स्वरूप का ज्ञान प्राप्त हुआ।

**परिकल्पना**

अनुसंधान प्रक्रिया में विश्वसनीय ज्ञान प्राप्त करने का एक माध्यम, परिकल्पना है, एवं इसके द्वारा ही अनुसंधानकर्ता, स्पष्ट व मान्य निष्कर्षों तक पहुँचाता है। परिकल्पना शोधकर्ता को अनुसंधान की दिशा में निर्देशित करती है। चित्रकला का इतिहास बहुत पुराना रहा है। पाषाण काल से ही आदिमानव ने गुफा में चित्रण करना आरम्भ कर दिया था। पाषाण काल से समकालीन कला में नये-नये आयामों, कला तकनीकों का निरन्तर विकास होता आया है। मेरे शोध विषय **बस्तर क्षेत्र की जनजातीय आनुष्ठानिक व तांत्रिक कलाओं का कलात्मक अध्ययन** द्वारा में बस्तर की कलाओं की अलग-अलग विधाओं व नवीन प्रयोग का सौन्दर्यानुभूति का वर्णन कर सभी के समक्ष प्रस्तुत करने का सम्यक प्रयास करूँगी।

**उद्देश्य-**

एक शोधकर्ता को अपना शोध प्रारम्भ करने से पूर्व अपने निर्धारित उद्देश्य का सर्वप्रथम ज्ञान होना चाहिए कि वह किस उद्देश्य से शोध कार्य कर रहा है। मेरे इस शोध को पूर्ण करने हेतु निम्न उद्देश्य का पालन किया जायेगा-

1. बस्तर क्षेत्र की जनजातीय कलाओं पर प्रकाश डालना।
2. बस्तर जनजातीयों की प्रमुख कलाओं का परिचय प्राप्त करते हुए उन कलाओं को संसार के समक्ष प्रस्तुत करना।
3. बस्तर क्षेत्र की कला में समाज की तत्कालीन परम्परा एवं कला-शैलियों के वैविध्यपूर्ण अतिरिक्त समन्वय का

अध्ययन

4. बस्तर क्षेत्र की कलाओं की विषय वस्तु माध्यम एवं तकनीक में विभिन्नता एवं एकता दोनों को ही सूक्ष्म विवेचना के आधार पर प्रस्तुत करना।

5. बस्तर क्षेत्र की जनजातीय कला के आनुष्ठानिक तांत्रिक, कलात्मक एवं सौन्दर्यात्मक स्वरूपों की विवेचना का विस्तृत अध्ययन।

**चर-**

1. बस्तर क्षेत्र में स्थानीय भ्रमण
2. बस्तर क्षेत्र की जनजातियों से साक्षात्कार
3. विभिन्न कला-संग्रहालय एवं पुस्तकालय
4. कला-समीक्षक
5. इण्टरनेट

**अनुसंधान अभिकल्प**

मैंने अपने शोध कार्य **बस्तर क्षेत्र की जनजातीय आनुष्ठानिक व तांत्रिक कलाओं का कलात्मक अध्ययन** के लिये वस्तु विश्लेषण विधि एवं वर्णनात्मक शोध अभिकल्प का चयन किया है।

**प्रदत्त संकलन**

**प्रथम स्त्रोतः-** जनजातिय कलाओं की कलाकृतियां एवं जनजातीय लोगों से साक्षात्कार

**द्वितीयक-स्त्रोतः-** पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाये, कला-समीक्षक, इन्टरनेट-स्त्रोत तथा मेरी सम्मानीय शोध-निर्देशिका के साथ शोध-विषय पर विचार विमर्श।

**प्रतिदर्श का आकार**

इस शोध कार्य हेतु मैं लगभग 150-200 कलाकृतियों का चयन करूंगी।

**सीमाएं**

प्रत्येक शोध कार्य की समय-सीमा निर्धारित होती है। मैं अपने शोध कार्य **बस्तर क्षेत्र की जनजातीय आनुष्ठानिक व**

**तांत्रिक कलाओं का कलात्मक अध्ययन** लगभग 150-200 कलाकृतियों का चयन करूंगी, जो मेरे शोध का मुख्य विषय रहेंगे।

**निष्कर्ष**

जनजातिय कलायें हमें हमारी संस्कृति व परम्पराओं से अवगत कराती है। इन जनजातिय कलाओं की कृतियों से समाज और देश का जो प्रतिबिन्ब दिखाई देता है उसमें संस्कृति की एक अमिट छाप परिलक्षित है। इसी प्रकार बस्तर की आदिवासीय जनजाति लोक-कला परम्परा, सौन्दर्यानुभूति एवं पुरातन संस्कृति को प्रकट करती है, जो मेरे अध्ययन का मुख्य विषय है।

**आधुनिक युग में प्रासंगिकता**

इस शोध अध्ययन में पुरातन लोक-संस्कृति में संरक्षित करते हुए नवीन आयामों तक चित्रण परम्परा एवं कलाकृतियों की विभिन्न विधाओं, कलात्मक पक्षों, विषय तथा तकनीक के महत्वपूर्ण पक्षों को स्पष्ट किया जायेगा, जिसके फलस्वरूप मेरा शोध प्रबन्ध भविष्य के शोधार्थियों हेतु उनके ज्ञानवर्धन में सहायक सिद्ध होगा।

**विषयानुक्रमणिका**


**भूमिका-** बस्तर क्षेत्र की जनजातीय कला का सिंहावलोकन

**प्रथम अध्यायः** बस्तर क्षेत्र का भौगोलिक एवं ऐतिहासिक परिचय

1.1- बस्तर जनजातियों का वर्गीकरण

1.1.1- मुरिया

1.1.2- माड़िया

1.1.3- गोंड

1.1.4- पारथी

1.1.5- हल्बा

1.1.6- अन्य जनजातियाँ

**द्वितीय अध्यायः** बस्तर जनजातियों का सांस्कृतिक परिदृश्य

2.1- जनजातियों द्वारा प्रचलित विश्वास व धार्मिक मान्यतायें

2.2- संस्कृति का संरक्षण

**तृतीय अध्यायः** बस्तर क्षेत्र की जनजातीय कला की विषयवस्तु

3.1- आनुष्ठानिक रूप में

3.2- तांत्रिक/जादू-टोना के रूप में।

**चतुर्थ अध्यायः** बस्तर क्षेत्र की जनजातीय कला का तकनीक व शैली के आधार पर कलात्मक विवरण

4.1- भित्ति-चित्र

4.2- स्तम्भ-निर्माण

4.3- मूर्ति- निर्माण

4.4- अंग- सज्जा

4.5- अन्य कलायें

**पंचम अध्यायः** बस्तर की कला की आधुनिक युग में प्रासंगिकता

**उपसंहार**

**परिशिष्टः** सन्दर्भ

सन्दर्भग्रन्थ- सूची

bibliography

Internet Website

चित्रफलक- सूची

**अनुसन्धान- अभिकल्प**

**भूमिका** के अन्तर्गत मैं बस्तर क्षेत्र की कला का सिंहावलोकन प्रस्तुत करूंगी।

**प्रथम अध्याय** के अन्तर्गत मैं बस्तर के क्षेत्र-इतिहास को प्रस्तुत करते हुये बस्तर की भौगोलिक, ऐतिहासिक एवं जनजातीय परिचय को प्रस्तुत करूँगी।

**द्वितीय अध्याय** के अन्तर्गत मैं बस्तर के सांस्कृतिक परिदृश्य को दर्शाते हुये जनजातीय द्वारा प्रचलित विश्वास व धार्मिक मान्यताओं व संस्कृति के संरक्षण को प्रस्तुत करूंगी।

**तृतीय अध्याय** के अन्तर्गत मैं बस्तर क्षेत्र की कलाओं की विषयवस्तु को आनुष्ठानिक व तांत्रिक क्रियाओं के रूप में प्रस्तुत करूंगी।

**चतुर्थ अध्याय** के अन्तर्गत मैं बस्तर क्षेत्र की जनजातीय कला के माध्यम एवं तकनीक के कलात्मक पक्ष के विवरण को प्रस्तुत करूंगी।

**पंचम अध्याय** के अन्तर्गत मैं बस्तर की कला का आधुनिक युग में प्रासंगिकता को प्रस्तुत करूंगी।

**संदर्भ ग्रन्थ- सूची**


- **अग्रवाल अनसूया –** 2003, छत्तीसगढ़ के व्रत-विहार अरू कथा-कहिनी, शताक्षी प्रकाशन, रायपुर
- **एलविन वेरियर –** 2008, मुरिया और उसका घोटुल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
- **गुप्ता नीलिमा -** 2010, भारतीय लोककला छत्तीसगढ़ के सन्दर्भ में, स्वाति पब्लिकेशन्स, दिल्ली
- **कुमार अमरोहित गीतेश –** 2021, छत्तीसगढ़ की जनजातियां, सरस्वती प्रकाशन, नई दिल्ली
- **महाजन संजीव -** 2012, भारत में जनजातीय समाज, अर्जुन पब्लिकेशन, दिल्ली
- **शुक्ल हीरालाल -** 2007, आदिवासी बस्तर का वृहद इतिहास, बी.आर. पब्लिकेशन, दिल्ली
- **वैष्णव हरिहर -** 2014, बस्तर की आदिवासी एवं लोकहस्तशिल्प परम्परा, राधाकृष्णा प्रकाशन, दिल्ली


**Bibliography**


❖ Hasnain Nadeem- 2021, Tribal India, Palaka Prakashan, Delhi

❖ Mahawar Niranjan- 2014, Art and Crafts of Chattisgarh, Banyan Tree Publication, New Delhi

❖ Mahawar Niranjan- 2019, Muria Tribes: Its Culture and Purfarming arts, Aayu Publication, New Delhi

❖ Shukla heeralal- 1987, Tribal History a near Interpretion (Bastar), B.R. Publishing, Delhi

- Sahay Gopi Krishna- 2019, States of India Chattisgarh, Kunal Prakashan, Delhi
- Verrier Elwin- 1992, Muria and Their Ghotul, Vanya Prakashan, Bhopal (M.P.)

## Internet Websites

http://www.sahapedia.org/folk-art

http://www.sahapedia.org/muria-Painting

http://www.rexgin.in>blog-Post-43

http://youtu.be/8djxFsCR194in.pinterest.com

http://www.etvbharat.com

परिशिष्ठ

चित्र - सूची

**Fig. 1- बस्तर भित्ती – चित्र**
**(Source- https://images.app.goo.gl/ZjNH8PL6HLYQmuch8)**

Fig. 2- मूर्तियाँ

(Source- https://images.app.goo.gl/mnas9XLKLfp5ChGQ8)

Fig. 3- मृतक – स्तंम्भ

**(Source- https://images.app.goo.gl/LyXkf2JH8DbQJavN8)**

Fig. 4- मिट्टी की वस्तुएं

**(Source- https://images.app.goo.gl/B2zR6VNZxc58aAzv9)**